बिना कुंडली मिलाये आजीवन चलने वाला एक अदभुद सम्बन्ध केवल मित्रता।

– अज्ञात

कर्ज का यह बोझ

यह तिमाही रिपोर्ट बताती है कि कर्ज का यह बोझ अपनी सामान्य रफ्तार से ही बढ़ रहा था, मगर कोरोना और लॉकडाउन के चलते इसमें काफी तेजी आ गई। अप्रैल से जून तिमाही में उठाए गए कर्ज में सात लाख करोड़ का अचानक इजाफा होने से यह 100 लाख करोड़ की मनोवैज्ञानिक सीमा पार कर गया।

आरती शाह।।

वित्त मंत्रालय के डिपार्टमेंट ऑफ इकनॉमिक अफेयर्स की ताजा रिपोर्ट के मुताबिक केंद्र सरकार का कुल कर्ज पहली बार 100 लाख करोड़ रुपये के पार चला गया है। यह तिमाही रिपोर्ट बताती है कि कर्ज का यह बोझ अपनी सामान्य रफ्तार से ही बढ़ रहा था, मगर कोरोना और लॉकडाउन के चलते इसमें काफी तेजी आ गई। अप्रैल से जून तिमाही में उठाए गए कर्ज में सात लाख करोड़ का अचानक इजाफा होने से यह 100 लाख करोड़ की मनोवैज्ञानिक सीमा पार कर गया।

यह खबर एकबारगी सबका ध्यान जरूर खींचती है लेकिन वित्तीय मामलों के जानकार शायद ही इसे अपने आप में कोई बहुत बड़ी बात मानें। तीन ट्रिलियन डॉलर (करीब 230 लाख करोड़ रुपये) के जीडीपी वाले देश के लिए 100 लाख करोड़ (43 फीसदी) का कर्ज सामान्य स्थिति में चिंता की बात क्यों मानी जानी चाहिए? खासकर तब, जब अमेरिका जैसे देश में कर्ज जीडीपी के 106 फीसदी से ऊपर और जापान में 246 फीसदी से ऊपर हो।

अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष की दिसंबर में आई रैंकिंग के हिसाब से देखें तो कर्ज के बोझ के मामले में भारत का स्थान 170 देशों में 94 वां है। लेकिन कागजी बातों के आधार पर खुद को भुलावे में रखना भी ठीक नहीं होगा। अमेरिका और जापान जैसे देशों से भारत की स्थिति की तुलना नहीं की जा सकती क्योंकि यह वित्त घाटे और व्यापार घाटे के दोहरे दबाव में चलने वाली अर्थव्यवस्था है। सबसे बड़ी बात यह कि देश की जीडीपी ग्रोथ गंभीर रूप से नेगेटिव हो चुकी है। माइनस 23.9 की मौजूदा दर से ऊपर उठकर अगली तिमाहियों में हम बेहतरी की ओर बढ़ने लगें तो भी कोरोना के माहौल में तुरंत और तेज रिकवरी की उम्मीद नहीं कर सकते। ऐसे में जहां राजस्व वसूली में कमी आनी तय है, वहीं यह भी निश्चित है कि रिकवरी के लिए सरकार को खर्च बढ़ाना होगा, जिसका एकमात्र तरीका फिलहाल और ज्यादा कर्ज लेना ही हो सकता है। यानी निकट भविष्य में कर्ज का बोझ बढ़ने ही वाला है।

प्रसंगवश याद किया जा सकता है कि कर्ज के जाल (डेट ट्रैप) में फंसने की आशंका अस्सी के दशक में सार्वजनिक चर्चा का विषय हुआ करती थी। डेट ट्रैप तकनीकी तौर पर वह स्थिति है, जब एक देश को अपने कर्ज की किस्तें और ब्याज अदा करने के लिए नया कर्ज लेना पड़ता है। नब्बे के दशक में शुरू हुए आर्थिक सुधारों ने इस चर्चा को अतीत की बात बना दिया था।

अभी, तीन–चार दशक बाद बेहद असामान्य स्थितियों में कर्ज पर चर्चा राष्ट्रीय विमर्श का हिस्सा बनी है लेकिन न तो ये हालात स्थायी हैं और न ही इस चर्चा से परेशान होने की कोई जरूरत है। महामारी के संकट से उबरते हुए हम जैसे–जैसे विकास की अपनी पिछली रफ्तार के करीब पहुंचेंगे वैसे–वैसे ये चुनौतियां छंटने लगेंगी। हालांकि उससे पहले हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि विभिन्न स्रोतों से लिए जा रहे कर्ज के इस्तेमाल में किसी तरह की लापरवाही न हो और उसे पॉप्युलिज्म की भेंट न चढ़ने दिया जाए।

युद्ध और शान्ति

अशोक वोहरा।

धर्म-दर्शन

एक सत्य यह भी है कि कई बार शान्ति चाहते हुए भी राष्ट्रों को अपनी सार्वभौमिकता, स्वतंत्रता और स्वाभिमान की रक्षा के लिए युद्ध लड़ने पड़ते हैं। जैसे द्वापर युग में पाण्डवों को, त्रेता युग में श्रीराम को तथा आज के युग में भारत को लड़ने पड़े हैं। परन्तु यह तो निश्चित ही है कि किसी भी स्थिति में युद्ध अच्छी बात नहीं। इसके दुष्परिणाम पराजित व विजेता दोनों को भुगतने पड़ते हैं। अतः मानव का प्रयत्न सदैव बना रहना चाहिए कि युद्ध न हों तथा शान्ति बनी रहे।

गीता के माध्यम से भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को अनासक्त कर्म यानी श्फल की इच्छा किए बिना कर्मश करने की प्रेरणा दी। इसका प्रमाण उन्होंने अपने निजी जीवन में भी प्रस्तुत किया। मथुरा विजय के बाद भी उन्होंने वहां शासन नहीं किया।

संपादकीय

असली भारत का जागरण

सत्ता के शीर्ष पर नरेंद्र मोदी की मौजूदगी के परिणाम स्वरूप असली भारत का जागरण हो रहा है, जो सत्ता के गलियारों और राजनीतिक रूप से सही होने की अंतःक्रिया में कहीं खो गया था। आज जब दुनिया भारत के विश्वगुरु के दर्जे को वापस पाने के लिए की जा रही नरेंद्र मोदी की पहल को देखती है तो हमें आश्चर्य होता है कि हमारी सभ्यता का यह सरल लेकिन इतना गहरा पहलू सत्ता के गलियारों में बैठे लोगों के लिए इतने लंबे वक्त तक कभी अजेंडे पर लाने लायक भी क्यों नहीं था। मां गंगा को अर्पित भावांजलि में केवल मोदी के शब्द नहीं हैं। ये शब्द तो दुनिया भर में फैले उन करोड़ों लोगों के विश्वास का प्रतिनिधित्व करते हैं जो इस भावना को साझा करते हैं। चाहे केदारनाथ की एक गुफा में बैठकर शिव का ध्यान करना हो या उन्मुक्त ढंग से भारतीय धर्मग्रंथों से विचार उद्धृत करना हो, मोदी एक ऐसी सभ्यतागत पहचान को जागृत करने का प्रतीक हैं जिसे जबरन नींद में धकेल दिया गया था। चाहे ढाका में ढाकेश्वरी मंदिर के दर्शन करना हो या काठमांडू में भगवान पशुपतिनाथ के, या फिर अबू धाबी में पहले मंदिर का उद्घाटन करना, भारत का अपनी जड़ों से जुड़ना अब उत्साह से छलकती हुई क्रिया बन गया है और यह ऐसा क्षण है जिसके लिए लोगों ने बहुत लंबा इंतजार किया है। शायद, इसके लिए एक सच्चे भारतीय का इंतजार था, जो आए और अपनी संस्कृति को अंगीकार करे।

मोदी ने भारत की वैविध्यपूर्ण संस्कृति के लिए बार–बार अपना समर्थन दिखाया है, चाहे वह नृत्य, कला, संगीत, पोशाक और खान–पान की आदत आदि जिस भी रूप में हो। वे सही मायनों में इसके सर्वश्रेष्ठ सांस्कृतिक राजदूत रहे हैं।

सांप्रदायिक कहलाने का डर

सोनल मानसिंह।।

हाल तक ऐसा दौर रहा, जब भारत के राजनीतिक और प्रशासनिक वर्ग को गंभीरता से नहीं लिया जाता था। वे भारतीय सभ्यता की विरासत तथा सांस्कृतिक जड़ों से भी अलग–थलग रहा करते थे। आधिकारिक बैठकें सत्ता के गलियारों तक सीमित रहती थीं और खानपान महंगे होटलों की रसोई के स्टैंडर्ड मेन्यू तक सिमटा रहता था। भारत ने खुद ही अपने दरवाजे बंद कर लिए थे। वह बदलाव के लिए कदम नहीं उठाता था और अपनी अलग पहचान नहीं बनाता था। भारत जैसे विविध भाषाओं, खानपान, संस्कृति, वेशभूषा और धर्मों वाले देश में आधुनिक लगने और राजनीतिक रूप से सही दिखने के लिए सभ्यता के सामान्य सूत्रों से किनारा कर लिया गया था। अपनी पहचान के बारे में आत्मनिंदा और क्षमा याचना से भरी बातों के चलते भारत का वास्तविक चेहरा ही छिप गया था।

यह कशमकश से भरा एक ऐसा परिदृश्य था जहां बहुसंख्यक लोगों को छोटा माना जाता था। 'अनंत पाप' के लिए पश्चाताप करना उनके लिए मानक बन गया था, अन्यथा उन्हें 'सांप्रदायिक' करार दे दिया जाता था। इस सांस्कृतिक स्थिति ने राष्ट्र के अभिजात (इलीट) वर्ग को अत्यधिक प्रभावित किया और यह वर्ग

भारत की इच्छाओं से पूरी तरह विमुख हो गया। ऐसी ताकतें, जो आपके गौरव और पहचान के प्रतीकों को तोड़–मरोड़ कर पेश कर रही हैं, क्या उनसे खुद को अलग करना उचित नहीं होगा? नतीजा यह हुआ कि चाहे यह भाषा, संस्कृति, संगीत, कला या अपने स्वर ही क्यों न हों– उनकी अभिव्यक्ति की स्वीकार्यता रसातल में पहुंच गई थी।

विडंबना यह है कि भारत से इतर दुनिया अपनी मूल पहचान तथा उसके मूल तत्वों से जुड़ी रही है। प्राचीन और प्रसिद्ध भारतवर्ष अभी तक हमें अपनी मौजूदा भौगोलिक सीमाओं के भीतर जीवन जीने के एक तरीके, एक सभ्यता और सांस्कृतिक पहचानों की याद दिलाता है। असली भारत के बहिष्कार का का यही वह आईना है जिसे नरेंद्र मोदी की सांस्कृतिक पहचान की शांत किंतु दृढ़ अभिव्यक्ति ने तोड़ दिया है। एक ऐसा नेता भारत के हृदय से उभरा है जो अपनी सांस्कृतिक जड़ों को लेकर बहुत स्पष्ट है और उन्हें खुले तौर पर प्रदर्शित भी करता है। यहां हम एक ऐसा राजनेता देखते हैं जो अपनी पारंपरिक भारतीय पोशाक में दिखाई देने में संकोच नहीं करता, चाहे भारत में हो या विदेश में। यह नेता तमिलनाडु के परिधान वेष्ठी (धोती) में भी उतना ही सहज है जितना पूर्वोत्तर की टोपी या फिर नौकरशाहों के 'बंद गला' में, जिसने हमारी राजनीति और कूटनीति का लंबे समय तक प्रतिनिधित्व किया है।

नरेंद्र मोदी ने भारत की वैविध्यपूर्ण संस्कृति के लिए बार–बार अपना समर्थन दिखाया है, चाहे वह नृत्य, कला, संगीत, पोशाक और खान–पान की आदत आदि जिस भी रूप में हो। वे सही मायनों में इसके सर्वश्रेष्ठ सांस्कृतिक राजदूत रहे हैं। हमें याद आता है कि कैसे उन्होंने 'हाउडी मोदी' कार्यक्रम में कई भाषाओं में खुद को अभिव्यक्त करके भारत की भाषाई विविधता दिखाई। भारत की अभिव्यक्ति का यही वह उच्चारण है जो हमें बताता है कि नरेंद्र मोदी का गर्व खुद को श्रेष्ठ महसूस करने को लेकर नहीं है, बल्कि यह स्वयं में सहज होने से उपजता है। यह बात भारतीय लोगों तक भी पहुंच गई है और वे अपनी सांस्कृतिक भिन्नता को लेकर हीनता का अनुभव नहीं करते।

सूडोकु नवताल-5480

सरल

3	9			1	4			2
1	2		6		3		5	
		5		8	7			9
	7			6	9			8
2	1			5			4	6
4			3	2			9	
9			8	4		5		
	6		9		5		2	4
8			1	7			6	3

Jagrutidaur.com, Bangalore

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल -5479 का हल

6	9	2	3	7	4	5	8	1
3	8	5	6	2	1	7	4	9
7	4	1	8	9	5	6	2	3
2	3	9	5	4	6	8	1	7
1	7	4	9	8	3	2	6	5
5	6	8	7	1	2	9	3	4
4	5	7	1	6	8	3	9	2
8	2	3	4	5	9	1	7	6
9	1	6	2	3	7	4	5	8

अपना ब्लॉग

भारत की वास्तविक सॉफ्ट पावर

मोहन। 'अंतरराष्ट्रीय योग दिवस' भारत की वास्तविक सॉफ्ट पावर को दुनिया के सामने प्रस्तुत करने में लगी रचनात्मकता का प्रमाण है। नेताओं को नई दिल्ली के अपने दायरों से बाहर निकालकर अहमदाबाद, वाराणसी, चंडीगढ़ या मामल्लपुरम जैसी जगहों पर ले जाकर नरेंद्र मोदी ने दिखाया है कि यह नया भारत दरअसल पुराने और नए दोनों के साथ सहज है और अपने सभ्यतागत मूल्यों और विश्वासों से संचालित है। संवाद और विमर्श के उदाहरण के रूप में आदि शंकराचार्य और मंडन मिश्र के बीच के महान शास्त्रार्थ से दिए गए नरेंद्र मोदी के संदर्भ दरअसल एक ऐसी सभ्यता को लेकर एकदम सही समझ प्रस्तुत करते हैं जो ज्ञान को पूजती है, परस्पर विश्वास के जरिए विजय प्राप्त करने में यकीन रखती है और परिस्थिति व पद की परवाह किए बगैर सम्मान की गारंटी देती है। मोदी बारीकियों का मूल्य जानते हैं। अपनी संस्कृति और सभ्यता के प्रति उनका प्रेम भाव कभी भी कर्कश या वर्चस्ववादी नहीं होता।